भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-9, अंक-9	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
शनिवार, 27 सितं. '86	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

एक बार सूरत के हरिभक्तों ने महाराज के लिये अचार भेजने की इच्छा व्यक्त की तथा सद्. मुक्तानन्दस्वामी ने भी 'सतीगीता' नामक एक ग्रन्थ लिख कर तैयार करा था वह भी महाराज को अर्पण करना था। सद्. मुक्तानन्दस्वामी ने मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी को महाराज के पास गढ़डा अचार व ग्रंथ दोनों ले जाने की आज्ञा करी और पूछा 'तुम्हारी जोड़ में किसे ले जाओगे?' इतने में तो सभा में बैठे शांतानंदस्वामी खड़े हुए और कहा 'गुणातीतानन्दस्वामी के साथ मैं गढ़डा जाऊंगा। आप हाँ कहोगे तब भी जाऊँगा और ना कहोगे तब भी जाऊँगा।' सद्. मुक्तानंदस्वामी को यह उच्छृंखलतापूर्ण वर्तन जंचा नहीं. परन्तु वे कभी भी साधुओं के प्रति अपना गुरुभाव रखते ही नहीं थे, सो उन्होंने हँसकर कहाः भले तुम्हारा ऐसा आग्रह है तो मैं क्यों ना कहूँ?

गुणातीतानन्दस्वामी अपनी जोड़ के साधु के साथ अचार को तीन बड़ी बरनियाँ और 'सतीगीता' ग्रंथ एवं एक नई चटाई जो महाराज को अर्पण करनी थी—वह लेकर गढ़डा जाने निकले। तब सुरत के हरिभक्तों ने स्वामी को कहा कि हमारी ओर से महाराज को गले मिलना। उन दिनों वाहन व्यवहार की ऐसी कोई सुविधा नहीं थी, रास्ते भी विकट थे। पर, हरिभक्तों का प्रेम साथ में लेकर महाराज की अखंड स्मृति सहित रात दिन चलते हुए स्वामी चौथे दिन गढ़डा पहुँचे !

उन दिनों चारों ओर अकाल की परिस्थिति चल रही थी इसलिए महाराज एकांतवास में ध्यान में ही अधिक समय व्यतीत करते थे। ज्यादातर किसी को मिलते भी नहीं थे। अतः महराज कहाँ हैं वह भी किसी ने स्पष्ट बताया नहीं। स्वामी तो महाराज के दर्शन करके नेत्रों को तृप्त करने को अत्यंत व्याकुल थे...आखिर में नाजा जोगिया द्वारा समाचार मिला कि महाराज कारियाणी जाने वाले हैं—वहाँ उनके दर्शन होंगे। स्वामी का तो यह सुनकर आनन्द

का पार न रहा और वे तुरन्त गढ़डा से कारियाणी जाने निकल पड़े।

कारियाणी में महाराज वस्ताखाचर के दरबार में खाना खाने बैठे ही थे कि स्वामी वहाँ पहुँचे। महाराज को दंडवत् करके स्वामी वहीं बैठ गये। महाराज ने सद्. मुक्तानन्दस्वामी व सुरत के हरिभक्तों के समाचार पूछे और स्वामी को खाना खाते-खाते प्रसाद दिया। स्वामी की चार दिन की थकान महाराज के दर्शन और प्रसाद से मिट गई ! नयन तृप्त हुए ! अंतर शांत हो गया ! खाना खाने के बाद स्वामी ने महाराज को कहा 'महाराज ! सुरत के हरिभक्तों ने आपको गले मिलने कहा है।' महाराज एकदम गद्दी के नीचे उतर पड़े और कहा है' कि तुम एक-एक हरिभक्त का नाम लेकर मुझसे गले मिलो। इस प्रकार बाईस बार महाराज सभी हरिभक्तों के नाम से स्वामी को गले मिले !

गुणातीतानन्दस्वामी के साथ में आये शांतानन्द स्वामी को कहा कि 'महाराज मैं भी आया हूँ, मुझे भी तो मिलो।' तब अंतर्यामी सर्वज्ञस्वरूप महाराज ने उसे कहा कि तुम कहाँ सद्. मुक्तानन्दस्वामी की आज्ञा से यहाँ आये हो? तुम तो जबरदस्ती हठ करके आये हो; इसलिए मैं तुम्हें नहीं मिलूँगा। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले से गले मिलते हुए हमारा शरीर जलता है।' यह सुनकर वह साधु खूब उदास हो गया, परन्तु दयालु प्रकृति के गुणातीतानन्दस्वामी ने तुरन्त महाराज को कहा :

कृपानाथ ! जीव तो ऐसा ही होता है। आपकी कृपा हो तो ही जीव सुधर सकता है। इस साधु ने रास्ते में अचार की बरनियाँ आदि उठाई थीं और बहुत मेहनत करी थी।' स्वामी की यह बात सुनकर महाराज दुबारा गद्दी से उतरे और उस साधु से गले मिले, पर साथ ही कहा कि यह गुणातीतानंदस्वामी को बाईस बार गले मिलते मुझे कठिन नहीं पड़ा, पर तुम्हें एक बार गले मिलना कठिन बड़ रहा है।

आज्ञा का उलंघन करने वाले पर महाराज को कभी भी प्रेम नहीं था। लेकिन इस प्रसंग को देखने से प्रतीत होता है-मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामी का अत्यंत दयालु स्वभाव... और यह भी कि महाराज उनका कहा टाल नहीं पाते थे.... महाराज की मूर्ति स्वामी को सम्पूर्णतया वश थी... सच में महाराज स्वामी के अनुरागी थे !!

☆☆☆

अविस्मरणीय अस्थिविसर्जन

समग्र गुणातीत समाज को विदित ही है कि हम सभी के प्रभु-करुणा के चिदाकाश प.पू. काकाजी महाराज ने इस साल 7 मार्च के दिन स्वतंत्र रूप से अपनी स्थूल जीवन लीला समेट ली। सभी के लिए यह असहनीय चोट थी। हरेक यही विचार में डूब गये कि यह क्या हो गया? परन्तु दिव्यस्वरूप में उन्होंने हरेक को किसी-न-किसी रूप में प्रतीति कराई है कि मैं यहाँ ही आप सबके पास-सबके बीच ही हूँ। अपनी करुणा वह बरसाते ही रहे हैं... वास्तविकता तो यह ही है कि हमने भले ही उन्हें-उनकी बातों को-नजरअंदाज करी होगी-उन्होंने शरीर रहते हुएव शरीर छोड़ने के बाद भी अपने अल्प संबंध वालों को सूर्य की तरह प्रकाश देना अविरत चालू ही

रखा...! दिव्य विभूति का कैसा दिव्य प्रेम...!

सभी भक्तों चित्त की इस दुःखद भूमिका से थोड़े धरातल पर आये तो ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी की अस्थियाँ हरिद्वार गंगा में प्रवाहित करने का कार्यक्रम निश्चित हुआ। बम्बई से करीब 60 हरिभक्तों, युवकों और पवाई की बहनों को लेकर गुणातीत समाज के सूत्रधार पू. कान्तिकाका 21 अगस्त की सुबह प.पू. काकाजी महाराज का अस्तिकुंभ लेकर दिल्ली पधारे...अस्थिकुंभ को देखते ही सब एक बार फिर प.पू. काकाजी की स्मृतियों में डूब गये। सोखड़ा से पू. शास्त्रीस्वामी व संतमंडल तो पहले ही इस पवित्र कार्य में सम्मिलित होने दिल्ली आ चुके थे। 22 अगस्त की सुबह तीन बसों और गाड़ी में प.पू. काकाजी के अस्थिकुंभ को लेकर सब हरिद्वार जाने निकले....सारा रास्ता भजन करते-करते, काकाजी के साथ जुड़ी स्मृतियों को आपस में याद करते-करते सहारनपुर तक पहुँचे....सहारनपुर में प.भ. सेवक कुमार जी के यहाँ ठाकुर जी को भोग लगाने का कार्यक्रम पहले से निश्चित था....उन्हें लगभग दोपहर 11.30 बजे तक पहुँचने का समय दिया था, पर दिल्ली से निकलने में थोड़ी देर होने के कारण लगभग 3.30 बजे बसें सहारनपुर पहुँची.....इस परिवार की सद्भावना उमंग, खुशी देखते ही बनती थी....केवल अहोभाव ! इनसे बातचीत करके मालूम हुआ कि सुबह से घर के बच्चों ने भी अब तक इस भावना से खाना नहीं खाया है कि भगवान को भोग धराये बिना कैसे खाया जाये? और इतनी अच्छी व्यवस्था.....जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अपने घर पर यदि 10 मेहमान भी आ जायें तो हम घबरा जाते हैं, पर 200 हरिभक्तों के भोजन का कार्यक्रम एक घंटे के अन्दर-अन्दर ही निपट गया....प.भ. सेवक कुमार जी व परिवार को इस सेवा के लिये हम सभी की ओर से हार्दिक धन्यवाद !

सहारनपुर से थोड़ा विश्राम करके हरिद्वार के लिये निकल पड़े....रास्ते में भजन का कार्यक्रम चालू ही रहा। रात को लगभग 8.00 बजे हरिद्वार-सप्त सरोवर पहुँच गये। पंजाब से भी करीब बीस हरिभक्तों प.पू. काकाजी महाराज को आखिरी श्रद्धांजलि देने पहले ही यहाँ आ पहुँचे थे। सभी के रुकने इत्यादि की व्यवस्था प.पू. स्वामिश्री सत्यामित्रानन्द गिरिजी महाराज द्वारा निर्मित भारत माता मन्दिर के साथ समन्वय कुटीर में थी। प.पू. स्वामीजी महाराज तो विदेश की यात्रा पर गये हुए थे—पर वहाँ के व्यवस्थापक श्री न्यायमित्र शर्माजी व सभी कार्यकर्ताओं ने सब प्रकार से खूब सहयोग दिया। इनके सहयोग से श्री शांतीभाई ने भोजन की व्यवस्था करके ही रखी थी, सो थके होने के कारण सब भोजन करके सो गये.....

23 अगस्त की सुबह सभी ने भारत माता मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के एवं सभी देवी-देवताओं के दर्शन करे और....प.पू. काकाजी के अस्थिकुंभ को लेकर सभी भागीरथी-गंगा की ओर चल पड़े....स्वामिश्री सर्वानन्दघाट के पास महापूजा, धून्य, भजन, आरती करी.....सभी

भावशून्य नतमस्तक थे। पू. कान्तिकाका, संतमंडल, युवकों, बहनों ने अपने प्राणप्रिय प्रभु के अस्थिकुंभ का आखिरी पूजन किया....सबके हृदय व्यथित थे.....प.पू. काकाजी का अनहद् परिश्रम, लाड़-प्यार सबके दिलों पर छाया हुआ था। अन्त में पू. कान्तिकाका और पू. शास्त्रीस्वामी, पू. भाईस्वामी और संतमंडल एवं ताड़देव के युवकों के साथ जाकर सभी ने 'काका हे ! अमर रहो' के नारों के साथ उस दिव्य विभूति की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित कर दिया। उस दृश्य की याद आते ही अभी भी आँखों में अश्रु छलक आते हैं....अपने प्रियतम को आखिरी विदाई देते हुए सभी फूट-फूट कर रो पड़े। पर सभी मन में दृढ़प्रतिज्ञ हुए कि अब तो मन की मान्यताओं, हल्की वृत्तियों को यहाँ गंगा में ही विसर्जित कर देना है....स्थूल शरीर के दर्शन सेवा, समागम हमने खो दिया पर दिव्यस्वरूप में हरपल प्रगट प.पू. काकाजी को अब उनके ही ढंग से जीकर, उनके एक ही सिद्धान्त 'सुहृदभाव' में अपने आपको होम करके उन्हें 'हाश' कर देना है। इसी संकल्प के साथ सब हरकी पौढ़ी पहुँचे....वहाँ दूबारा स्नान किया....और लौट कर सभी ने भोजन किया। सायं पांच बजे हरिद्वार के महत्वपूर्ण पवित्र मनसा देवी के मन्दिर के दर्शन करे....पश्चात् हर की पौढ़ी पर गंगाजी की संध्या आरती के दर्शन किये। अस्थिविसर्जन की तारीख के बारे में कुछ गल्तफहमी के कारण जगरांव वाले पंडित श्री बलवंतरायजी अब तक आ पहुँचे थे। अस्थिविसर्जन के कार्यक्रम में तो वे सम्मिलित नहीं हो पाये–फिर भी, सभी को मिलकर उन्हें अत्यंत संतोष हुआ।

अगले दिन सुबह प.पू. काकाजी का प्रासादीक स्थान बद्रीनाथ–जहाँ प.पू. काकाजी ने बम्बई मंडल को ले जाने कई बार कहा था– उनका वह वचन पूरा करने बम्बई के मुक्तों को लेकर पू. कान्तिकाका और पू. शास्त्रीस्वामी एवं संतमंडल बद्रीनाथ जाने निकल गये। अन्य सभी का ऋषिकेश जाने का प्रोग्राम निश्चित हुआ था....सुबह ही अल्पाहार करने के बाद सभी ऋषिकेश के लिए निकल पड़े..... ऋषिकेश में गुरुहरि योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी के प्रासादीक स्थल पर धून्य भजन करके सभी ने स्नान किया। लक्ष्मणझूला, रामझूला व मन्दिरों के दर्शन किये.. वहां से लौटकर सभी ने भोजन किया और फिर दिल्ली वापस आने की तैयारी में लग गये....शाम को लगभग 5.00 बजे 'समन्वय कुटीर' के सभी कार्यकर्ताओं का दिल से आभार व्यक्त करके हरिद्वार से दिल्ली आने निकल पड़े। भजन करते-करते रात को 12.00 बजे दिल्ली पहुँच गये....

☆☆☆

.....और श्रीजीमहाराज ने कहा—

....यह जीव कई प्रकार का जो भोजन करता है उसका भिन्न-भिन्न स्वाद तथा भिन्न-भिन्न गुण होता है। उन भोजनों को खाने से वे गुण अन्तःकरण में तथा शरीर में फैलते है। जैसे कोई भाँग पी लेता है और यदि वह प्रभु का भक्त ही क्यों न हो, तो भी भांग के नशे में उसे न तो धर्मपालन

का भान रहता है और न ही प्रभु भजन की भी सुध रहती है। वैसे ही अनंत प्रकार के आहारों के गुण भी भांग की भांति अनंत प्रकार के होते हैं जिन्हें गिनते पार नहीं आवे।

यह जीव कानों द्वारा जिन विभिन्न शब्दों को सुनता है, उनके कई गुण भी अलग-अलग होते है। जैसे शब्द वह सुनता है वैसा ही गुण उसके अन्तःकरण में फैलता है। किसी हत्यारे या किसी व्यभिचारी पुरुष या स्त्री या लोक व वैदिक मर्यादा को तोड़ने वाले भ्रष्ट जीव की बात सुनना—वह तो भांग या शराब पीने जैसी ही है। वह तो सुनने वाले के अन्तःकरण को भ्रष्ट कर देती है और भगवान के भजन, स्मरण व धर्मपालन को भुला देती है।

इसी प्रकार त्वचा के स्पर्श भी अनंत प्रकार के हैं और उनके गुण भी अलग-अलग व अनंत प्रकार के हैं। उनमें पापी जीव का स्पर्श भांग व शराब के असर की तरह ही होता है। उसका स्पर्श यदि कोई हरिभक्त भी कर ले तो उसकी सुध-बुध खो जाती है।

उसी प्रकार रूप भी अनंत प्रकार के हैं और उनके गुण भी कई प्रकार के और भिन्न-भिन्न हैं। यदि किसी भ्रष्ट जीव को देख लिया जाये तो जैसे यदि शुद्ध होगा, तो अन्तःकरण शुद्ध होगा। और भांग व शराब पीने से उन्माद छा जाता है वैसे ही बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

वैसे ही गन्ध भी अनेक प्रकार की होती है और उसके गुण भी अनंत प्रकार के हैं। किसी पापी जीव के हाथ पुष्प की सुगन्ध यदि ले ली जाये तो भांग पीने की भांति ही उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

यूं एक ओर पतित व्यक्ति के संग जीव की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो दूसरी ओर परमेश्वर व परमेश्वर संत के योग से जीव की बुद्धि शुद्ध होती है। और, जीव की बुद्धि यदि भ्रष्ट हो, तो भी भगवान व संत की बातें सुनने से उत्तम हो जाती हैं। उनके स्पर्श से भी मति उत्तम होती है। यदि नियम-मर्यादा के कारण महान संत का स्पर्श न कर सकें तो उनकी चरणधूलि को लेकर मस्तक पर चढ़ाने से जीव पवित्र हो जाता है। उसी प्रकार महान संत के दर्शन से भी जीव पवित्र हो जाता है। परन्तु नियम-मर्यादा का ध्यान रखकर ही दर्शन करने चाहिए। वैसे ही, महान संत का प्रसाद जिमने से भी जीव पवित्र हो जाता है। परन्तु उनके लिये भी परमेश्वर ने वर्णाश्रम की जो मर्यादा निर्धारित की है उस मर्यादा को रखकर ही प्रसाद लेना चाहिए। वर्णाश्रम धर्म के अनुसार यदि कोई ऐसा प्रसाद नहीं ले पाता हो, तो वह उनसे प्रसाद के रूप में मिसरी लें। उसी प्रकार संत को अर्पित पुष्प और चंदन की सुगन्ध लेने से भी बुद्धि निर्मल हो जाती है।

इसलिए शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध—इन पंचविषयों को बिना समझे जो भोगेगा और सार-असार का विवेक नहीं करेगा, तो चाहे वह नारद सनकादिक जैसा भी क्यों न हो उसकी भी बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी। तब फिर देहाभिमानी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाये उसमें क्या शक ! अतः **योग्य-अयोग्य का विचार किये बिना उन पंचइन्द्रियों को जो इधर-उधर प्रवृत्त करेगा उसका अन्तःकरण भ्रष्ट हो जायेगा।** पञ्च इन्द्रियों द्वारा जीव जो आहार करता है वह आहार यदि अन्तःकरण शुद्ध होगा तो भगवान की स्मृति अखंड बनी रहेगी। पर पञ्च इन्द्रियों के आहार में से यदि एक भी इन्द्रिय का आहार मलिन रहा, तो अन्तःकरण मलिन हो जायेगा। इसलिए **भगवान के भक्त को भगवान के भजन में जो कोई विक्षेप आता है उसका कारण अन्तःकरण नहीं, वरन् पञ्च इन्द्रियों के विषय ही हैं।**

गढ़डा प्रथम प्रकरण-18
बुधवार, 7 दिसं. 1819

☆☆☆

स्वामी की बातें

61. छोटे बच्चे को जब किसी चीज से भय लगता है तो वह अपने माँ बाप के गले चिपक जाता है, वैसे ही हमें जब भी कोई दुःख आये तो भगवान का भजन करना, स्तुति करना; सो भगवान रक्षा करेंगे ही। प्र-1,319

62. किसी को भगवान प्रधान हो और किसी को व्यवहार प्रधान हो। इन दोनों को सरीखा फल कैसे मिल पायेगा? यह बात भी जान लेना। प्र-1,322

63. भगवान के लिये हमने जो-जो किया है और कर रहे हैं वह सब वे जानते हैं और जिसकी गोद में सिर रख दिया है वे निश्चित रक्षा करेंगे और हमारी तो भगवान खूब मान लेते हैं। प्र-1,331

64. एक रुचि वाले दो ही हों तो समझना लाखों व हजारों के बराबर हैं। अन्यथा तो लाखों व हजारों हों तो भी अकेला ही है यूँ समझना। प्र-1,336

65. भगवान को अपने भक्त को-कूटपीट कर भी-कुछ भी करके ब्रह्मरूप करना। प्र.-1, 337

66. 'पूर्व-संस्कार' शब्द प्रचलित है। यह 'पूर्व-संस्कार' अर्थात 'पूर्वजन्म' में जो किया इसी का ही संस्कार—यूं नहीं समझना। आज का क्रियमाण कल की दृष्टि से पूर्व (संस्कार) है। हमें बड़े संत का संग हुआ वह आज बहुत बड़ा पूर्वसंस्कार हुआ है। प्र-1,339

67. कथा करें, कीर्तन करें (भगवान की) बातें करें किन्तु 'यह देह मैं नहीं हूँ' यूं नहीं माना जाता। अतः आठों प्रहर भजन करना कि 'मैं देह नहीं हूँ किन्तु देह में रहने वाली आत्मा हूं, ब्रह्म हूं, अक्षर हूं और मेरे भीतर परमात्मा परब्रह्म, पुरुषोत्तम प्रगट प्रमाण अखंड विराजमान है। वे कैसे हैं? तो सर्व अवतारों के अवतारी हैं, सर्व कारणों के कारण हैं और सबसे परे है, वे प्रगट रूप में यह जो मिले हैं वही वे हैं। इस बात में सांख्य योग और योग दोनों आ गये।' प्र-1-343

68. जैसे गाय अपने बछड़े के लिये दूध छोड़ देती है। वैसे ही शिष्य अपने गुरु को मान सौंपे तो अन्तःकरण का अज्ञान टाल दे, पर मन सौंपे बिना तो टले नहीं। प्र-2,4

69. अब तो गृहस्थ घर में बद्ध रहेंगे और त्यागी क्रिया योगों में ! जैसे कोई कामी, स्त्री को देखता रहता है, ठीक वैसे ही भगवान तो जीव के सामने देखते रहते हैं कि कोई मेरा स्मरण करता है? किन्तु जीव इतना उल्टा है कि वह अन्य पदार्थों को देखता रहता है, परन्तु भगवान के सम्मुख नहीं देखता। प्र-2-14

70. बड़े-बड़े मकान जो मिले हैं और अच्छा-अच्छा खाना जो मिलता है या मान मिलता है इत्यादि मनुष्य देह का फल नहीं है वह तो प्रभु के जो भक्त नहीं हैं उन्हें भी मिलता है। मनुष्य देह का फल तो अच्छे साधु का संग और स्वभाव टले इतना ही है। प्र-2,19

☆☆☆

ब्रह्मप्रवाह.....

मन का रोग अंतर का मैल निकल जाये और शुद्धिकरण हो इसके लिये–

या तो सतर्क रहे,
या तो शिक्षा की जाये,
या अष्टांगयोग सिद्ध करे,
या रोग भेजे,
या प्रसंग खड़ा करे,
या केवल कृपा करे–
तो टले।
और

तप तथा बड़े संत की अनुवृत्ति के मुताबिक जीये तो जीव तत्काल शुद्ध हो जाये और देह में रहते हुए ही ब्रह्मरूप होकर भगवान में जुड़ जाकर अक्षरधाम का ही दिव्य सुख अखंड लिया करें।

अतः पू. स्वामिजी कहें–सर्वोत्तम तप मन को मारना और अनुवृत्ति में अन्दर-अन्दर सुहृदभाव बढ़ाना व प्रकट स्वरूप को सर्वोपरि-कर्ता-दिव्य-साकार मानकर, प्राप्ति में आनंद मानकर किसी की भी झंझट में पड़े बिना ध्यान और भजन करने की लगन लगा देनी।

प.पू. काकाजी महाराज
सितंबर, 1969

☆ ☆ ☆

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 21.9.86	रविवार	ब्र.स्व.शास्त्री जी महाराज का श्राद्धदिन
2.	दि. 28.9.86	रविवार	श्रीजी महाराज एवं पू. जागा स्वामी का श्राद्धदिन
3.	दि. 29.9.86	सोमवार	एकादशी, व्रत
4.	दि. 30.9.86	मंगलवार	प.पू. श्री योगीजी महाराज का श्राद्धदिन
5.	दि. 1.10.86	बुधवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी एवं पू. भगतजी महाराज का श्राद्धदिन
6.	दि. 4.10.86	शनिवार	नवरात्रे प्रारंभ
7.	दि. 12.10.86	रविवार	विजयादशमी (दशहरा)
8.	दि. 13.10.86	सोमवार	एकादशी, व्रत
9.	दि. 16.10.86	गुरुवार	शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. श्री गुणातीतानन्दस्वामी की जन्मजयंती
10.	दि. 19.10.86	रविवार	श्री जागास्वामी की जन्मजयंती

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P.,Printers, Shahdara, Delhi-110 032